International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(5): 173-174

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(5): 173-174
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-07-2019
Accepted: 04-08-2019

डॉ0 अर्चना पाल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा,
आर. सी. ए. गर्ल्स ;पी.जी.द्ध
कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

Correspondence
डॉ0 अर्चना पाल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा,
आर. सी. ए. गर्ल्स ;पी.जी.द्ध
कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

संस्कृत भाषा का समाकलित रूप

डॉ0 अर्चना पाल

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा भारत–यूरोपीय भाषा परिवार की भारत–ईरानी (Indo-Iranian) शाखा के अन्तर्गत भारतीय आर्य–भाषा वर्ग में आती है। प्राचीन भारतीय आर्य–भाषा के दो रूप हैं– वैदिक भाषा और लौकिक संस्कृत वैदिक भाषा वैदिक साहित्य में, मुख्यतया संहिताओं, ब्राह्मण–ग्रन्थों, आरण्यकों और प्राचीन उपनिषदों में प्रयुक्त हुई है, जहाँ उसमें विकास होता हुआ दिखाई पड़ता है। पाँचवीं शताब्दी ईसवी पूर्व में पाणिनि के व्याकरण द्वारा संस्कृत को ऐसा नियमबद्ध किया गया कि उसके द्वारा नियन्त्रित रूप प्रचलित हो गया, जिसे लौकिक संस्कृत कहा जाता है। लौकिक संस्कृत के पाणिनीय व्याकरण के नियमों में निबद्ध होने पर भी कुछ देशज एवं अन्य भाषाओं के कतिपय शब्द आते रहे हैं, तथा शब्दों के अर्थों में विकास होता रहा है।

संस्कृत भाषा का जो रूप हमें उपलब्ध होता है, वह वस्तुतः हजारों वर्षों के विकास–क्रम से होकर आया है। यह माना जाता है कि जब आर्य लोग भारत में आये ता यहाँ आस्ट्रिक परिवार की मुण्डा आदि तथा द्रविड़ परिवार की भाषाओं के बोलने वाले लोग रहते थे। इन लोगों की भाषाओं का आर्यों की भाषा पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। ध्वन्यात्मक और पदरचनात्मक दृष्टि से तो कम प्रभाव हुआ किन्तु शब्दावली की दृष्टि से आर्यों की भाषा काफी प्रभावित हुई।

प्रो0 टी. बरो (T. Burrow) ने अपनी पुस्तक 'Sanskrit Language' (पृ. ३७८ –३७९) में, एफ. बी. जे. कपूर (F.B.J. Kuiper) ने अपनी पुस्तक 'Prote-Munda Words in Sanskrit' में अनेक शब्दों को संस्कृत में मुण्डा आदि आस्ट्रिक परिवार की भाषाओं से आया हुआ बतलाया है। डॉ0 पी. सी. बागची द्वारा सम्पादित Pre-Aryan and Pre-Dravidian पुस्तक में कई महत्वपूर्ण लेख हैं, जैसे प्रो0 प्रजीलुस्की (Przyluski) का लेख (पृ. १४९ –१६०), तथा प्रो० सिलवेन लेवी (Sylvan Levi का लेख– Pre-Aryan and Pre-Dravidian in India (पृ० ६३–१२३), और प्रो० ब्लॉख (Block) का लेख – Sanskrit and Dravidian (पृ. ३७ – ५९)। इन लेखों में आस्ट्रिक परिवार की मुण्डा आदि भाषाओं से तथा द्रविड परिवार की भाषाओं से संस्कृत में आये शब्दों को दर्शाया गया है।

आस्ट्रिक परिवार की मुण्डा आदि भाषाओं से आये हुए माने जाने वाले कुछ उल्लेखनीय शब्द हैं–

अलाबु (लौकी), बाण, पिनाक (धनुष), कपोल, नारिकेल, भेक (मेंढ़क), जंघा, कपोत, हलाहल, कदली (केला), कर्पास (कपास), जम्बाल (कीचड़) जिम् (जीमना), ताम्बूल (पान), मरिच (मिर्च), लांगल (हल), सर्षय (सरसों), आकुल, आटोप, आपोड़, कज्जल, कण्ठ, कनक, कबरी, कवल, कुण्ठ, कुब्ज, कोकिल, खड्ग, घट, गण, जाल। प्रा० प्रजोलुस्की का मानना है कि जो 'म्ब', 'बु' ध्वनि वाले शब्द हैं, उनमें अधिकतर मुण्डा भाषा की देन हैं,[1]

जैसे– दाडिम्ब, कदम्ब, शिम्ब, रक्भा, स्तम्ब, तुम्ब, तुरबुरु, उदुम्बर, निम्बु, जम्बु, जम्बीर, लाबु, अलाबु आदि। संस्कृत का 'गुड' शब्द भी मुण्डा के गुल, गुला, गूल से सम्बद्ध है। कुछ भौगोलिक स्थानों के नाम भी संस्कृत भाषा में मुण्डा से आये माने जाते हैं, जैसे कोसल, तेन्सल, अंग–बंग, कलिंग–त्रिलिंग, उत्कल–मेकल, पुलिंद–कुलन्द आदि।

संस्कृत भाषा की शब्दावली पर द्रविड भाषाओं का भी व्यापक प्रभाव माना जाता है। किटेल ने अपने कन्नड – इंगलिश कोश (मंगलोर १८९४) की प्रस्तावना (पृ० १७–४५) में सैकड़ों संस्कृत शब्दों की सूची दी हैं जिन्हें संस्कृत में द्रविड़ भाषाओं से आया हुआ माना है। प्रो० टी. बरो ने भी अपनी पुस्तक 'संस्कृत लैंग्वेज' (पृ. ३८०–३८६) में अनल, अर्क, असल, उलूखल, कटु, कठिन, काक, कानन, कुटि,

[1] डॉ० केशवराम पाल : हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों में अर्थ–परिवर्तन, पृ. २७४–२७५

कोण, खल, चतुर, तूल, दण्ड, नीर, पण्डित, बल, बिल, मयूर, महिला आदि अनेक संस्कृत शब्दों के द्रविड़ भाषाओं से आने का उल्लेख किया है।

कुछ संस्कृत शब्दों से मिलते–जुलते शब्द कई द्रविड भाषाओं में पाये जाते हैं। इस तथ्य से उन संस्कृत शब्दों के द्रविड परिवार की भाषाओं से आने की सम्भावना प्रकट होती है। यहाँ कुछ ऐसे शब्दों के उदाहरण दिये जा रहे हैं[२]–

संस्कृत अनल (आग), तमिल अनल (अग्नि, धातु 'जलाना'), मलयालम अनल (आग, ताप)य कन्नड अनलु (ताप)
संस्कृत अलस (आलसी), तमिल अलचुय मलयालम अलयुकय कन्नड अलसु (थका हुआ)।
संस्कृत उलूखल (ओखली), तमिल उलक्कइय मलयालम उलक्कय कन्नड ओलके।
संस्कृत कटु (कड़वा), तमिल कटुय मलयालम कटु, तेलुगु, कडु।
संस्कृत कानन (वन), तमिल का, कान, कानन, कानलय मलयालम काबु, कानल।
संस्कृत कुटी तमिल कुटी, तेलुगु, गुडी।
संस्कृत कुटिल, तमिल कोटु, कूट, मलयालम कोटुय कन्नड कुडु।
संस्कृत चूड़ा (बालों का गुच्छा), तमिल चूटु (सिर पर पहननाय सिर के बालों का गुच्छा)य मलयालम चूट्टु (मुर्गे की कलगी)य कन्नड सूडु।
संस्कृत दण्ड, तमिल तण्टु, कन्नड दण्टु, दण्ड, तेलुगु, दण्टु।
संस्कृत नीर (जल), तमिल, मलयालम, कन्नड नीरय तेलुगु नीरुय ब्राहुई दीर।[2].

संस्कृत मीन (मछली), तमिल मीन, कन्नड मीन, तेलुगु मीनु।

इनके अतिरिक्त भी जो संस्कृत शब्द द्रविड़ भाषाओं से आये हुये माने जाते हैं, उनमें कुछ उल्लेखनीय हैं–– एड (भेड़), कज्जल, करीर (बांस), कुटिल, कुछाल (कुदाल) कुवलय (कमल), धुण, धूक (उल्लू), चन्दन, चुम्ब् (चूमना), निर्गुण्डी (गिलोय), पण्ड् (शर्त करना), बक, बिल्व, मुकुल, वलय, शव, हेरम्ब आदि।

कुछ विद्वान संस्कृत में मूर्धन्य ध्वनियों के विकास में भी द्रविड़ भषाओं का योगदान मानते हैं। बिशप काल्डवेल ने अपनी पुस्तक A Comparative Grammar of Dravidian Languages में इसका विस्तृत विवेचन किया है। वस्तुतः भारोपीय परिवार की भाषाओं में संस्कृत के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में मूर्धन्य ध्वनियाँ नहीं पाई जाती हैं। आर्यों का द्रविडों के साथ दीर्घकालिक सम्पर्क रहने के कारण आर्यों की भाषा में मूर्धन्य ध्वनियों के विकसित होने की सम्भावना व्यक्त की जाती है, किन्तु कुछ विद्वान् भारतीय आर्य–भाषाओं में मूर्धन्य ध्वनियों का विकास विभिन्न ध्वनि–संयोगों के परिणामस्वरूप मानते हैं।

लौकिक संस्कृत में कुछ ऐसे शब्द भी आये हैं, जो प्राकृत रूप थे, अर्थात् जो प्राकृत भाषाओं में संस्कृत से ही विकसित हुए थे, फिर वे संस्कृत में ग्रहण कर लिये गये। ऐसे शब्दों की श्रेणी में वट, नापित (नाई), लांछन (ढलक्षण) पुत्तल (ढपुत्र + ल), मनोरथ आदि हैं। संस्कृत में 'मारिष' शब्द 'मित्र' अर्थ में प्रयुक्त होता है। मादृशः से प्राकृत – रूप 'मारिस' हुआ और वह फिर 'मारिष' के रूप में संस्कृत नाटकों में प्रचलित हो गया। संस्कृत के 'मैरेम' शब्द 'शराब' अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। संस्कृत 'मदिर' से प्राकृत 'मदूर' और 'मदूरेअ' विकसित हुए य 'मइरेअ' से ही संस्कृत 'मैरेम' हो गया। अन्य भी बहुत से शब्द प्राकृत आदि भाषाओं के माध्यम से संस्कृत में प्रयुक्त होने लगे हैं।

वस्तुत

संस्कृत भाषा का इतिहास हजारों वर्षों का होने के कारण यह स्वाभाविक ही है कि इसमें अन्य भाषाओं के शब्द भी समय–समय पर आते हैं। किसी भाषा के प्रयोक्ता जब दूसरी भाषाओं के प्रयोक्ताओं के सम्पर्क में आते हैं और सम्पर्क लम्बे समय तक बना रहता है तो दोनों ओर के प्रयोक्ताओं में धीरे–धीरे सहजता से शब्दों का आदान– प्रदान होने लगता है। जैसे कोई नस्ल सर्वथा शुद्ध नहीं होती, इसी प्रकार कोई भाषा भी सर्वथा शुद्ध नहीं होती। व्यक्तियों अथवा समाजों के आपसी सम्पर्कों से भाषा प्रभावित होती रहती है। संस्कृत भाषा पर भी अन्य भाषाओं के प्रभाव की प्रक्रिया प्राचीनकाल से चलती आई है। संस्कृत में कुछ शब्द प्राचीन ईरानी भाषा से भी आये हुए माने जाते हैं,[३] जैसे – लिपि (प्राचीन फारसी दिपि) बारबाण (कवच) (ढप्राचीन ईरानी 'वरोपन' खोल (एक प्रकार का लोहे का शिरस्त्राण) (ढअवेस्तन खलोद), अश्ववार (ढप्राचीन फारसी असवार 'घुड़सवार'), पुस्तक (ढफारसी पुस्त 'पृष्ठ, चर्म')।

प्राचीन भारतीयों के यूनान के लोगों के साथ सम्पर्क के कारण भी कुछ शब्द संस्कृत में ग्रीक भाषा से आये माने जाते हैं, जैसे– खलीनः (लगाम), ग्रीक खलीनोस्, सुरंग (भूमि के अन्दर बनाया गया मार्ग), कुमेलक (ऊँट) ढ(ग्रीक) क्रमिलोस् (ऊँट), जमित्र ढ ग्रीक त्रिआभित्रोन् 'ज्यामिति', होरा 'मुहूर्त' आदि।

सन्दर्भ

1. एफ. बी. जे. कूपर & Proto – Munda Words in Sanskrit.
2. किटेल – कन्नड इंग्लिश डिक्शनरी, मंगलौर – १८९४
3. डॉ0 केशव राम पाल – हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों में अर्थ परिवर्तन, पृष्ठ–४
4. प्रो० टी० बरो– Sanskrit Language
5. डॉ० देवीदत्त शर्मा – भाषिकी और संस्कृत भाषा, पृष्ठ संख्या १३६।
6. डॉ० पी० सी० बागची – Pre Aryan and Pre Dravidian
7. डॉ० भोला शंकर व्यास – संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन।

[2] डॉ० भोला शंकर व्यास : संस्कृत का भाषा–शास्त्रीय अध्ययन, पृ. २७४–२७५